

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)

बुलेटिन संख्या-७२

दिनांक-शुक्रवार, ५ अक्टूबर, २०१८



टेलीफोन - ०६२७४-२४०२६६

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३४.० एवं २३.० डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ७८ सुबह में एवं दोपहर में ५७ प्रतिशत, हवा की औसत गति २.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ४.० मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ६.३ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २८.० एवं दोपहर में ३४.० डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में पूसा मौसमीय वेधशाला में १२.६ मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(६ से १० अक्टूबर, २०१८)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी ६ से १० अक्टूबर, २०१८ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में मौसम के आमतौर पर शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३३ से ३५ डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान २२ से २४ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- औसतन ८ से १० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पुरवा हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में करीब ८० से ८५ प्रतिशत तथा दोपहर में ५५ से ६५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुए किसान भाई शरदकालीन गन्ना, मसूर, मटर, राजमा, मेथी, लहसुन, धनियाँ, राई एवं सुर्यमुखी फसलों के समय से बुआई के लिए खेतों की तैयारी करें। खेत से सटे मेड़ों, नालों एवं आस-पास के रास्तों में उगे अवांछित जंगलों की साफ-सफाई अवश्य करें। ताकि इन जंगलों में छिपे कीट व रोगों के कारक आदी सम्पूर्ण रूप से नष्ट हो जाए। गोबर की सड़ी खाद १५०-२०० क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से पुरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर एवं जुताई कर मिला दें। यह खाद भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाती है। खेतों में अंकुरण के लायक नमी बनाये रखने के लिए खाली खेतों की प्रत्येक जुताई के बाद पाटा अवश्य चला दें।
- धान की गाभा की अवस्था, बालियों निकलने, दुग्ध भरने से दाना बनने की अवस्था तक धान की फसल में मृदा नमी बनाए रखने हेतु सिंचाई करते रहें। नमी में कमी होने पर उपज में काफी कमी होता है।
- बालियों निकलने तथा दुग्ध भरने की अवस्था वाली धान की फसल में गंधी बग कीट की निगरानी करें। धान की इस अवस्था में यह कीट पौधों की अधिक क्षति पहुंचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इस कीट के शिशु एवं पौढ़ दुग्धावस्था वाली धान की फसल में बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक-एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते हैं। इसके नियंत्रण के लिए फॉलीडाल १० प्रतिशत धूल का प्रति हेक्टेयर १०-१५ किलोग्राम की दर से भूरकाव ८ बजे सुबह से पहले अथवा ५ बजे शाम के बाद बालियों पर करें। खेतों के आस-पास के मेड़ों पर दवा का भूरकाव अवश्य करें।
- उचांस खेतों में तोरी की बुआई शुरु करें। तोरी की आर०ए०यू०टी०एस०-१७,पंचाली, पी०टी०-३०३ एवं भवानी किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित हैं। खेत की अन्तिम जुताई के समय ३० किलोग्राम नेत्रजन, ४० किलोग्राम स्फुर, ४० किलोग्राम पोटास एवं २० से ३० किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। जिंक की कमी वाले खेत में २५ किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें।
- मिर्च, फूल गोभी, टमाटर एवं बैंगन की फसल में आवश्यकतानुसार निकाई-गुड़ाई एवं सिंचाई करें। फूलगोभी की अगहनी,पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक-१, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेधना, काशी कुवॉरी एवं अर्ली स्नोवॉल आदि किस्मों की रोपाई करें। फूलगोभी की पिछत किस्मों जैसे *माधी, स्नोकिंग, पूसा स्नोकिंग-१, पूसा-२, पूसा स्नोवॉल-१६, पूसा स्नोवॉल के-१* की बुआई नर्सरी में करें।
- फूलगोभी की फसल में पत्ती खाने वाली कीट (डायमंड बैक मॉथ) की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू फूलगोभी की मध्यवाली पत्तियों तथा सिरवाले भाग को अधिक क्षति पहुंचाती हैं। शुरुआती अवस्था में यह पिल्लू पत्तियों की निचली सतह में सुरंग बनाकर एवं उसके अन्दर पत्तियों को खाता है। इस कीट से बचाव हेतु स्पेनोसेड ४८ इ०सी० दवा एक मि०ली० प्रति ४ लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- खड़ी फसलों एवं सब्जियों की नर्सरी जैसे बैंगन, टमाटर एवं मिर्च में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते हैं। रोग के विस्तार से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड दवा का ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें। बैंगन, टमाटर एवं मिर्च की नर्सरी से खर-पतवार निकाल दें।

आज का अधिकतम तापमान: ३२.५ डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से ०.३ डिग्री अधिक

आज का न्यूनतम तापमान: २१.५ डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से ३.० डिग्री कम

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी